Report - 1

Early Grade Language Learning

कार्यशाला – Azim Premji Faundation
दिनांक – 27/01/2020 से 31/01/2020 तक

कार्यशाला का उद्देश्य :–

- छोटे बच्चों का पढ़ने और लिखने की नीव मजबूत हो ताकि अगली पीढ़ी स्कूल और संसार की अपेक्षाओं को पूरा कर सके।
- बच्चे बहुत छोटी उम्र में ही प्रेक्षण, अंतःक्रिया बड़ो व अन्य कई बच्चों के साथ अनौपचारिक और पढ़ने–लिखने की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेते है।
- प्रथम पीढ़ी के साक्षरता, शिक्षार्थियों को उन भाषाई कौशलों को लेस कराना जो देवनागरी लिपि की ध्वनि और प्रतीकों के प्रक्रमण के लिए आवश्यक है।
- बच्चों को समझ के साथ पढ़ने–लिखने को तैयार करना है।
- पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया को आनंदप्रद, सार्थक बनाना जिससे बच्चें सतत् रूप से उससे जुडे रहें।
- बच्चे भरारहित, तनावमुक्त होकर पढ़ना–लिखना सीख सके, उनके आत्मविश्वास और सकारात्मक आत्म छवि के विकास में सहायक हों।

कार्यशाला का क्रियान्वयन :–

इस कार्यशाला को क्रियान्वित रूप देने हेतु योजनाएं बनायी गयी है – कक्षा एक व दो के लिए। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के अंतर्गत बच्चों को अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आजादी और अवसर हो एवं प्रोत्साहन देना। सामान्य अभिनय कराना। कविता, कहानी आदि को बोलकर सुनाने के अवसर हो और उस पर बातचीत करने के अवसर हो। हिंदी में सुनी गई बात को कविता, खेल गीत, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने सुनाने के अवसर हों।

विभिन्न प्रकार की एवं विभिन्न भाषाओं में रोचक सामग्री जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएं पोस्टर, ऑडियो–वीडियों सामग्री उपलब्ध हो। तरह–तरह की कहानियों, कविताओं को चित्र के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।

Learning Outcomes (सीखने की संप्राप्ति) में बच्चों से विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करना– जैसे कविता, कहानी सुनाना, जानकारी को साझा करना।

भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते है। प्रिंट और गैर प्रिंट सामग्री में अंतर करते है।

चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।

पढ़ी कहानी, कतिताओं आदि में लिपि चिह्नों/शब्दों/वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर उनकी पहचान करते हैं।

कार्य योजना :–

पढ़ना सिखाने हेतु स्त्रोत व्यक्तियों ने पुस्तकों की रचना करना (सचित्र)। इन निर्मित पुस्तकों से कक्षा 1 से 3 तक बच्चों को पढ़ाने की गतिविधियों का प्रदर्शन कराया।

पढ़ना सीखने की दो पद्धतियाँ– मथुरा प्रोजेक्ट और प्रगत शिक्षण संस्थान जो NCERT द्वारा संचालित प्रोजेक्ट है, का ऑडियो–वीडियो को प्रदर्शित किया। इन पर चच्र तथा दोनो पद्धति में अंतर पर कार्य किया जाना तथा समग्र पद्धति का प्रयुक्त करते हुए पाठ योजना की निर्माण कर कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों को पढ़ना–लिखना सीखने में प्रयुक्त कराना बताया गया। इन पर समीक्षात्मक चर्चा भी की गई।

Coordinator – डॉ. सीमा अग्रवाल, प्राध्यापक, सी.टी.ई. रायपुर, छ.ग.

स्त्रोत व्यक्तियों की जानकारी

1. श्रीमती निवेदिता – बैंगलोर
2. श्री अरविंद – बेमेतरा

Report - 2

Language Competency Improvement Course

महाविद्यालय अकादमिक सदस्यों की व्यावसायिक दक्षता उन्नयन हेतु महाविद्यालय सदैव प्रयत्नरत रहा है। इसी तारतम्य में – लैंग्वेज लर्निंग फाउण्डेशन दिल्ली L.L.F. द्वारा एक वर्षीय भाषा प्रशिक्षण कोर्स के लिए महाविद्यालय की डॉ. सीमा अग्रवाल तथा दो अन्य सदस्या श्रीमती लता मिश्रा एवं श्रीमती वाय. महाड़िक का चयन इस कोर्स हेतु हुआ। यह कोर्स/कार्यक्रम भाषा संबंधी दक्षता एवं कक्षागत प्रक्रिया तथा बालमल के भाषायी बोध को लेकर और उनकी भाषायी संभावनाओं को आगे बढ़ता है। निश्चय हो इस कोर्स को करने के बाद अकादमिक सदस्यों की भाषा संबंधी दक्षताओं को और अधिक विकास होगा। 09 दिसम्बर 2019 से इस कोर्स की शुरूआत हुई थी।

Report – 3

Learning Camp: Subject Materials (TLM) Developed for Deaf & Dumb, Blind Children and Mentally Retarted Children

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर, रायपुर में आज दिनांक 07–02–2020 को संस्था की प्राचार्या श्रीमती जे. एक्का के संरक्षण सहा. प्राध्यापक श्री यू. के. चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में एम.एड.चतुर्थ सेमेस्टर के छात्राध्यापकों द्वारा मुक एवं बधिर बच्चों के लिए लर्निंग कैंप का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में चतुर्थ सेमेस्टर के सभी छात्राध्यापकों ने कक्षा पहली से आठवीं तक के सभी विषयों भाषा, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के विषय वस्तु से संबंधित शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM&Teaching learning material) का निर्माण किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि बच्चे निर्देशों एवं संकेतों के अनुसार स्वयं करते जाएं एवं परिणाम तक पहुंचे तथा बच्चे स्वयं करके अवधारणा को समझें। इस कार्यक्रम में शासकीय दृष्टिबाधित एवं श्रवण बाधित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मठपुरैना के मुक एवं बधिर बच्चे प्रज्ञा मुक एवं बधिर विद्यालय के विद्यार्थी तथा कोपलवाणी के मुक एवं बधिर बच्चे आए हुए थे। सभी बच्चे आनंदित थे एवं उत्साह पूर्वक सभी पंडालों (स्टालों) में गतिविधि कर अवधारणात्मक समझ विकसित कर रहे थे । चूंकि ये खेल खेल में सीख रहे थे अतः उनमें खुशी दुगुनी दिख रही थी। एक खेल खेलने का एवं दूसरा सीखने का। छात्राध्यापकों एवं महाविद्यालय के लिए यह नया एवं प्रथम प्रयास था। छात्राध्यापकों में भी उत्साह था कि बिना भाषा के बच्चों को साइन लैंग्वेज में समझाना एवं उन्हें समझना।

इस लर्निंग कैंप का मुख्य उद्देश्य लर्निंग कैंप बच्चों को एक मंच प्रदान करता है जिससे उन्हें विभिन्न व्यवहारों और शिक्षार्थी की भूमिका को नए तरीके से पहचानने का अवसर प्राप्त होता है। यहां गलतियों से डर नहीं लगता बल्कि सीखने के कई चरणों में से एक चरण के रूप में देखा जाता है । जहां वास्तविक गतिविधि आनंददायी क्रीड़ा के रूप में पहचाने जाते हैं, यह बच्चों में आत्मविश्वास उनकी रचनात्मकता और टीम वर्क की समझ विकसित करने में मदद करता है। बच्चों को सीखने के विभिन्न तरीके समझने में मदद करता है एवं कक्षा– कक्ष की गतिविधियों से बाहर निकलने में मदद करता है । विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए रखा गया लर्निंग कैंप आनंददायी शिक्षा की ओर एक कदम था। ये बच्चे सामान्य बच्चों से ज्यादा अनुशासित एवं ऊर्जावान लगे। बच्चों के साथ B.Ed एवं M.Ed के सभी छात्र अध्यापकों एवं अकादमिक सदस्यों को भी समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के समन्वयक शिक्षिका श्रीमती मधु दानी रहीं । श्री सुनील मिश्रा, श्री तारकेश्वर देवांगन, श्रीमती प्रीति जैन एवं बी आर पी श्रीमती इति दासगुप्ता का इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा।

आज की प्रतियोगिता भरे समाज में जहां अभिभावक अपने बच्चों को एक यंत्रीकृत शिक्षा पद्धति की ओर धकेल रहे हैं। वहीं एक बंधी हुई परिपाटी पर चलते बालकों को एक अदृश्य व अनावश्यक द्वंद से दो–दो हाथ करते देख सकते हैं। सोचने की आवश्यकता है कि बच्चे अपनी पीठ पर जो ज्ञान का बोझ ढो रहे हैं वह उनके लिए कितना आवश्यक व सार्थक है। ज्ञान तो व्यक्ति के व्यक्तित्व को वजन प्रदान करता है, न केवल पीठ को। आवश्यकता है ऐसी शिक्षा नीति की जो इस बोझ को कम करें और शिक्षा को बोझ के बदले सार्थक बनाएं। बात जब विशेष आवश्यकता वाले बालकों की हो तब शिक्षण विधि का महत्व और बढ़ जाता है। आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सिखाने के तरीके भी अलग अलग होंगे इनकी आवश्यकताएं अलग–अलग होती हैं। जैसे कि दृष्टिबाधित बच्चों के लिए अलग, श्रवण बाधित बालकों के लिएअलग तो मंदबुद्धि बालकों के लिए अलग–अलग शिक्षण विधि की आवश्यकता होती है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय शंकर नगर रायपुर में आज दिनांक 07.02.2020 को संस्था की प्राचार्य श्रीमती जे. एक्का के संरक्षण, सहायक प्राध्यापक श्री यू. के. चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में चतुर्थ सेमेस्टर के छात्राध्यापकों द्वारा मुक एवं बधिर बच्चों के लिए लर्निंग कैंप का आयोजन किया गया था।

इस कार्यक्रम में चतुर्थ सेमेस्टर के सभी छात्राध्यापकों ने कक्षा पहली से आठवीं तक के सभी विषयों भाषा, गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान के विषय वस्तु से संबंधित शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM & Teaching learning material) का निर्माण किया गया था। जिनमें मुख्य रूप से 1. पूर्णाक का जोड़ घटाना लूडो के खेल द्वारा– पुष्पा चंद्रा 2. खाने की वस्तुएं– प्रीति पारीक 3. एक से 10 तक की संख्याओं की अवधारणा– देव सिंह अमेला 4. विद्युत अपघटन– प्राची तिवारी, प्रकाश चंद्राकर 5. घन एवं घनाभ का आयतन ज्ञात करना– फरजाना अली 6. वाहनों का नाम– रेणुका शर्मा 7. मिठाइयों की पहचान– अतुला बासु 9. सब्जियों की पहचान एवं अक्षर शब्द ज्ञान– लक्ष्मी कोटरे 10 कागज कार्यशाला– संजय कुमार एक्का 11.कौन सी वस्तु तैरेगी और कौन सी डूबेगी– सरला साहू 12. कलर कॉन्सेप्ट– राखी ठाकुर 13. यातायात के साधन एवं उनके मार्ग– ललित कुमार साहू 14. ट्रैफिक सिग्नल–जागेश्वर साहू 15. साइन लैंग्वेज और लिपि में संबंध स्थापित करना– तिलोत्तमा प्रधान 16 सब्सट्रैक्शन 1 से 9 – कौशिक सामल 17. महापुरुषों की पहचान– आरती पांडे 18. एक्शन वर्ल्ड क्रियात्मक शब्द– एकता गांधी 19. वर्ग पहेली शब्द ज्ञान– पूर्णिमा सोनी 20. किचन सामग्री– ममता बंजारे 21. फूलों की पहचान– वीणा साहू 22. जोड़ना जिसका उत्तर 10 से अधिक ना हो– विनोद चौधरी, प्रदीप विशाल 23. एक से 10 तक की संख्याएं– हितांशी निषाद 24. निर्देशात्मक वाक्य दो शब्द वाले– सुधा सेतपाल 25. लिस्ट ऑफ प्रोफेशनल (जॉब्स)– तजीन सिद्दीकी 26. भाग करना 1 से 20 तक संख्या– कविता चंद्राकर 27. सजीव निर्जीव वस्तुओं का वर्गीकरण– सविता गायकवाड 28. शब्द पहेली अक्षर ज्ञान– शालिनी प्रसाद 29. ऑड एंड इवन नंबर की पहचान करना –मधुलिका सोनी 30. क्ले आर्ट– कविता ठाकुर 31. पेंटिंग वर्क शॉप– जयश्री वर्मा 32.कक्षा कक्ष सामग्री– विभा सिंह चौहान।आदि से संबंधित मॉडल रखे गए थे। शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि बच्चे निर्देशों एवं संकेतों के अनुसार स्वयं करते जाएं एवं परिणाम तक पहुंचे तथा बच्चे स्वयं करके अवधारणा को समझें। इस कार्यक्रम में शासकीय दृष्टिबाधित एवं श्रवण बाधित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मठपुरैना के मुक एवं बधिर बच्चे, प्रज्ञा मुख एवं बधिर विद्यालय के विद्यार्थी तथा कोपलवाणी के मुक एवं बधिर बच्चे आए हुए थे। सभी बच्चे आनंदित थे एवं उत्साहपूर्वक सभी पंडालों (स्टालों) में गतिविधि कर अवधारणात्मक समझ विकसित कर रहे थे। क्योंकि खेल खेल में सीख रहे थे अतः उनमें खुशी दुगनी दिख रही थी। एक खेल खेलने का एवं दूसरी सीखने का। छात्राध्यापकों एवं महाविद्यालय के लिए यह नया एवं प्रथम प्रयास था। छात्राध्यापकों में भी उत्साह था कि बिना भाषा के बच्चों को साइन लैंग्वेज में समझाना एवं उन्हें समझना।

इस लर्निंग कैंप का मुख्य उद्देश्य लर्निंग कैंप बच्चों को एक मंच प्रदान करता है जिससे उन्हें विभिन्न व्यवहारों और शिक्षार्थी की भूमिका को नए तरीके से पहचान ने का अवसर प्राप्त होता है। यहां गलतियों से डर नहीं लगता बल्कि सीखने के कई चरणों में से एक चरण के रूप में देखा जाता है जहां वास्तविक गतिविधि आनंददायी क्रीड़ा के रूप में पहचाने जाते हैं। यह बच्चों में आत्मविश्वास उनकी रचनात्मकता और टीम वर्क की समझ विकसित करने में मदद करता है। बच्चों को सीखने के विभिन्न तरीके समझने में मदद करता है। एवं कक्षा– कक्ष की गतिविधियों से बाहर निकलने में मदद करता है ।

उपर्युक्त कार्यक्रम में विभिन्न दृष्टिबाधित एवं श्रवण बाधित संस्थानों से दिव्यांग विद्यार्थी और शिक्षकों ने शामिल होकर व अवलोकन कर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाईस यह संस्थान लगातार दिव्यांग विद्यार्थियों के हित में कार्यरत हैस कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए विशेष अनुभव का माध्यम रहा विभिन्न कलाओं और जानकारियों को लीक से हटकर बताया गया, जो शिक्षकों द्वारा सराहनीय रहास दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए किए गए प्रयास ने उन्हें विशेष महसूस कराया जोकि उनके लिए आकर्षण का केंद्र रहा। साथ ही बाहर से अवलोकन करने आए शिक्षकों ने CTE छात्राध्यापकों के इस प्रयास एवं उनकी क्रियात्मक शैली की सराहना की।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए रखा गया लर्निंग कैंप समावेशी शिक्षा की ओर एक कदम था इससे बच्चे ज्यादा अनुशासित एवं क्षमतावान होंगे। बच्चों के साथ B.Ed एवं M.Ed के सभी छात्र अध्यापकों एवं अकादमिक सदस्यों को भी समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम के समन्वयक शिक्षिका श्रीमती मधु दानी रही तथा श्री सुनील मिश्रा, श्री तारकेश्वर देवांगन, श्रीमती प्रीति सिंह एवं बी. आर. पी. श्रीमती इति दासगुप्ता का विशेष सहयोग रहा।